

1 मुझ प्राचीन की ओर से उस प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं सच्चा प्रेम रखता हूँ। **2** हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्किक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातोंमें उन्नति करे, और भला चंगा रहे। **3** क्योंकि जब भाइयोंने आकर, तेरे उस सत्य की गवाही दी, जिस पर तू सचमुच चलता है, तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ। **4** मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूँ, कि मेरे लड़के-बाले सत्य पर चलते हैं। **5** हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयोंके साय करता है, जो परदेशी भी हैं, उसे विश्वासी की नाई करता है। **6** उन्होंने मण्डली के साम्हने तेरे प्रेम की गवाही दी यी: यदि तू उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार परमेश्वर के लोगोंके लिथे उचित है तो अच्छा करेगा। **7** क्योंकि वे उस नाम के लिथे निकले हैं, और अन्यजातियोंसे कुछ नहीं लेते। **8** इसलिथे ऐसोंका स्वागत करना चाहिए, जिस से हम भी सत्य के पझ में उन के सहकर्मी हों। **9** मैं ने मण्डली को कुछ लिखा या; पर दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता। **10** सो जब मैं आऊंगा, तो उसके कामोंकी जो वह कर रहा है सुधि दिलाऊंगा, कि वह हमारे विषय में बुरी बुरी बातें बकता है; और इस पर भी सन्तोष न करके आप ही भाइयोंको ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है: और मण्डली से निकाल देता है। **11** हे प्रिय, बुराई के नहीं, पर भलाई के अनुयायी हो, जो भलाई करता है, वह परमेश्वर की ओर से है; पर जो बुराई करता है, उस ने परमेश्वर को नहीं देखा। **12** देमेत्रियुस के विषय में सब ने बरन सत्य ने भी आप ही गवाही दी: औश् हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है, कि हमारी गवाही सच्चा है। **13** मुझे तुझ को बहुत कुछ लिखना तो

या; पर सियाही और कलम से लिखना नहीं चाहता। 14 पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट करूंगा: तब हम आम्हने साम्हने बातचीत करेंगे: तुझे शान्ति मिलती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार करते हैं: वहां के मित्रोंके नाम ले लेकर नमस्कार कह देना।।